

अतर्रा की अंजलि द्विवेदी ने भाषण प्रतियोगिता में पाया द्वितीय स्थान।

दैनिक समाज जागरण बांदा ब्लूरो चीफ मयक शुक्रवार। बांदा ब्रह्म विजान इक अतर्रा बांदा की कक्षा 10 की छात्रा अंजलि द्विवेदी ने जनपदीय भाषण प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान प्राप्त किया जिस पर 2100 रुपये का पुस्कर मिला, जिला विद्यालय निरीक्षक श्री विनोद कुमार सिंह, ने दर्शनीय चेक प्रदान कर समाप्ति किया, विद्यालय के प्रधानाचार्य शिवदत्त त्रिपाठी प्रबंधक श्री सुरेन्द्र सिंह, कालीचरण बांदा प्रधान श्री विनोद कुमार, सर्वेन्द्र दीक्षित, समेनाथ, राजन्द्र कुमार, राजेश कुमार, सुरेन्द्र शर्मा, सुरेन्द्र शर्मा कमलशंकर कुमार, रामपिलनदाव, मधु संवित, प्रेमलता सिंह आदि सभी ने शुभकामनाएँ दी, तथा मण्डल में विजयी होने के लिए प्रेरित किया, यह प्रतियोगिता डीएवी इण्टर कालेज बांदा में हुई, मेरे जीवन में आयुर्वेद की उपयोगिता विषय पर भाषण प्रतियोगिता सम्पन्न हुई, अंजलि द्विवेदी ने अपनी खुशी का इजहार करते हुए कहा कि यह समाजिक ज्ञान मुझे माता पिता और गुरुजनों से ही मिला है।



जनपद बांदा के गांवों में अन्ना गोवंश को लगवाया जाए टीका

दैनिक समाज जागरण बांदा ब्लूरो चीफ मयक शुक्रवार।

बांदा । गांवों की गौशालाओं व अन्ना ठहल रही सड़कों में गोवंशों को लैपी वारपरस से बचाने के लिए टीका जल्द से जल्द लगावने व अन्य सुधार हेतु के संबंध में आज मुख्य चिकित्सा अधिकारी से मिलकर जनपद से संबंधित गौशालाओं में स्वास्थ्य सेवाएँ शासन के मंशास्थानों पर ही है, हमारी समिति के प्रधानकारियों ने गौशालाओं का व पशु चिकित्सालयों का भ्रमण कर व्यवस्थाओं का जावजा लिया। अधिकार गौशालाओं में संरक्षित जानवरों को व आवारा धूम रही

गोवंशों को अभी तक टीकाकरण हपते में केवल एक या दो बार ही आता है। गांव पंचायतों में फैल रहा है जिससे उनकी दर्दनाक मौत होना लापाम निश्चिह्न ही होता है। पशु चिकित्सालयों में चिकित्सक नहीं मिलते, समय से नहीं आते हैं, जिससे पशुपालकों को घटां इंतजार करना पड़ता है जिसके चलते वहां हुए कहा जाए कि घायल मरियादियों पर फर्खे कलास कम्हिचारी पशुओं का इलाज करा रहे हैं। चिकित्सक व कंपाउंडर वारपरस से ना आकर इधर होलों में अपना मोबाइल लगाया रहे हैं जिससे कई बार इलाज के अभाव में बीमार पशुओं की मौत होती है। किसी किसी पशु की मौत होती है तो संबंधित प्रधानियों से कड़ी से कड़ी कार्रवाई की जाए। जांच उपरांत भी चेतावनी दी जाए एवं मार्ग के साथ स्वास्थ्य सेवाओं को शासन के अनुसार सुनिश्चित किया जाए।



केंद्रीय मंत्री से मिल बांदा कानपुर मार्ग बनवाए जाने के लिए दिया ज्ञापन।

दैनिक समाज जागरण बांदा ब्लूरो चीफ मयक शुक्रवार।

बांदा जिला पंचायत सदस्य भरत सिंह ने भारत सरकार में सड़क परिवहन और राजमार्ग, जहाजरानी, जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण के केंद्रीय मंत्री नितिन गड़करी से मुलाकात की तथा अपने जनपद की खस्ताहाल सड़कों के विषय में अवगत करवाया।

सिंह ने केंद्रीय मंत्री नितिन गड़करी से मुलाकात करते हुए बताया कि बांदा से कानपुर का मुख्य सड़क मार्ग वारिस के चलते पूरी तरह ध्वस्त हो गया है। इसी खस्ताहाल सड़क से जनपद के चिकित्सालयों से रेफर किए गए गंभीर मरीजों को बेहतर इलाज हेतु कानपुर और लखनऊ के लिए गुजरा पड़ता है। खस्ताहाल सड़क की जीवंत हो जाने से जनपद के साथनों की दुर्दशा हो रही है तो वहीं दूसरी ओर अदामी अदामी से जीवंत हो जाने से जनपद करना पड़ता है। क्षेत्रीय विकास के लिए

सकती उस दूरी को तय करने में पांच से छः घंटे लगते हैं। खराब सड़क होने के चलते रेफर किए गए गंभीर मरीज कई बार रास्ते में ही दम तोड़ देते हैं। आवामन में भारी समस्या होती है। खराब और खस्ताहाल सड़क से जहां एक और यातायात के साथनों की दुर्दशा हो रही है तो वहीं दूसरी ओर अदामी अदामी को समस्या करना जाने से बड़ी राहत मिलती है।

जिला पंचायत सदस्य भरत सिंह ने कम कर सली है। सिंह का कथन है कि केंद्रीय मंत्री नितिन गड़करी ने आश्वासन दिया है कि जनहत और जन उपयोग कार्य शीघ्र करवाएं जायेंगे। जिला पंचायत सदस्य भरत सिंह के इस प्रयास से जनपदालयों में खुशी का महाल है। जनपद के व्यापारियों, मरीजों, गाड़ी मालिकों सहित आम आदमी को मूल धूम धार्म के बन जाने से बड़ी राहत मिलती है।

सकती उस दूरी को तय करने में पांच से छः घंटे लगते हैं। खराब सड़क होने के चलते रेफर किए गए गंभीर मरीज कई बार रास्ते में ही दम तोड़ देते हैं। आवामन में भारी समस्या होती है। खराब और खस्ताहाल सड़क से जहां एक और यातायात के साथनों की दुर्दशा हो रही है तो वहीं दूसरी ओर अदामी अदामी से जीवंत हो जाने से जनपद करना पड़ता है। क्षेत्रीय विकास के लिए

सकती उस दूरी को तय करने में पांच से छः घंटे लगते हैं। खराब सड़क होने के चलते रेफर किए गए गंभीर मरीज कई बार रास्ते में ही दम तोड़ देते हैं। आवामन में भारी समस्या होती है। खराब और खस्ताहाल सड़क से जहां एक और यातायात के साथनों की दुर्दशा हो रही है तो वहीं दूसरी ओर अदामी अदामी से जीवंत हो जाने से जनपद करना पड़ता है। क्षेत्रीय विकास के लिए

सकती उस दूरी को तय करने में पांच से छः घंटे लगते हैं। खराब सड़क होने के चलते रेफर किए गए गंभीर मरीज कई बार रास्ते में ही दम तोड़ देते हैं। आवामन में भारी समस्या होती है। खराब और खस्ताहाल सड़क से जहां एक और यातायात के साथनों की दुर्दशा हो रही है तो वहीं दूसरी ओर अदामी अदामी से जीवंत हो जाने से जनपद करना पड़ता है। क्षेत्रीय विकास के लिए

सकती उस दूरी को तय करने में पांच से छः घंटे लगते हैं। खराब सड़क होने के चलते रेफर किए गए गंभीर मरीज कई बार रास्ते में ही दम तोड़ देते हैं। आवामन में भारी समस्या होती है। खराब और खस्ताहाल सड़क से जहां एक और यातायात के साथनों की दुर्दशा हो रही है तो वहीं दूसरी ओर अदामी अदामी से जीवंत हो जाने से जनपद करना पड़ता है। क्षेत्रीय विकास के लिए

सकती उस दूरी को तय करने में पांच से छः घंटे लगते हैं। खराब सड़क होने के चलते रेफर किए गए गंभीर मरीज कई बार रास्ते में ही दम तोड़ देते हैं। आवामन में भारी समस्या होती है। खराब और खस्ताहाल सड़क से जहां एक और यातायात के साथनों की दुर्दशा हो रही है तो वहीं दूसरी ओर अदामी अदामी से जीवंत हो जाने से जनपद करना पड़ता है। क्षेत्रीय विकास के लिए

सकती उस दूरी को तय करने में पांच से छः घंटे लगते हैं। खराब सड़क होने के चलते रेफर किए गए गंभीर मरीज कई बार रास्ते में ही दम तोड़ देते हैं। आवामन में भारी समस्या होती है। खराब और खस्ताहाल सड़क से जहां एक और यातायात के साथनों की दुर्दशा हो रही है तो वहीं दूसरी ओर अदामी अदामी से जीवंत हो जाने से जनपद करना पड़ता है। क्षेत्रीय विकास के लिए

सकती उस दूरी को तय करने में पांच से छः घंटे लगते हैं। खराब सड़क होने के चलते रेफर किए गए गंभीर मरीज कई बार रास्ते में ही दम तोड़ देते हैं। आवामन में भारी समस्या होती है। खराब और खस्ताहाल सड़क से जहां एक और यातायात के साथनों की दुर्दशा हो रही है तो वहीं दूसरी ओर अदामी अदामी से जीवंत हो जाने से जनपद करना पड़ता है। क्षेत्रीय विकास के लिए

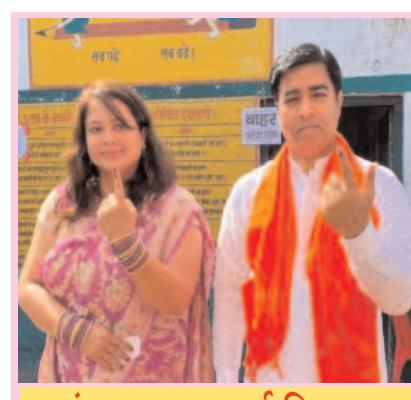
सकती उस दूरी को तय करने में पांच से छः घंटे लगते हैं। खराब सड़क होने के चलते रेफर किए गए गंभीर मरीज कई बार रास्ते में ही दम तोड़ देते हैं। आवामन में भारी समस्या होती है। खराब और खस्ताहाल सड़क से जहां एक और यातायात के साथनों की दुर्दशा हो रही है तो वहीं दूसरी ओर अदामी अदामी से जीवंत हो जाने से जनपद करना पड़ता है। क्षेत्रीय विकास के लिए

सकती उस दूरी को तय करने में पांच से छः घंटे लगते हैं। खराब सड़क होने के चलते रेफर किए गए गंभीर मरीज कई बार रास्ते में ही दम तोड़ देते हैं। आवामन में भारी समस्या होती है। खराब और खस्ताहाल सड़क से जहां एक और यातायात के साथनों की दुर्दशा हो रही है तो वहीं दूसरी ओर अदामी अदामी से जीवंत हो जाने से जनपद करना पड़ता है। क्षेत्रीय विकास के लिए

सकती उस दूरी को तय करने में पांच से छः घंटे लगते हैं। खराब सड़क होने के चलते रेफर किए गए गंभीर मरीज कई बार रास्ते में ही दम तोड़ देते हैं। आवामन में भारी समस्या होती है। खराब और खस्ताहाल सड़क से जहां एक और यातायात के साथनों की दुर्दशा हो रही है तो वहीं दूसरी ओर अदामी अदामी से जीवंत हो जाने से जनपद करना पड़ता है। क्षेत्रीय विकास के लिए

सकती उस दूरी को तय करने में पांच से छः घंटे लगते हैं। खराब सड़क होने के चलते रेफर किए गए गंभीर मरीज कई बार रास्ते में ही दम तोड़ देते हैं। आवामन में भारी समस्या होती है। खराब और खस्ताहाल सड़क से जहां एक और यातायात के साथनों की दुर्दशा हो रही है तो वहीं दूसरी ओर अदामी अदामी से जीवंत हो जाने से जनपद करना पड़ता है। क्षेत्रीय विकास के लिए

सकती उस दूरी को तय करने में पांच से छः घंटे लगते हैं। खराब सड़क होने के चलते रेफर किए गए गंभीर मरीज कई बार रास्ते में ही दम तोड़



संजय यादव, पूर्व विधायक
सिकंदरपुर, बलिया।

अति पावन व्रत करवा चौथ-----



आपने मन वरन कर्म से पत्नी को संतुष्ट रखना है व्रत

पत्नी पूरी ईमानदारी से सम्मुख आकर ही पति और उनके परिवार की सेवा में लीन हो जाती है। सेवा जतन लगायत हर कार्य करती भी है उपर से निर्जला करवा चौथ का व्रत कर पति को दीघार्यु बनाती है। ऐसे में पति को भी पत्नी की संतुष्टि के लिए कुछ करना चाहिए।

मेरा मानना है कि यदि मन कर्म और वचन से भी पत्नी को संतुष्ट रखा जाए तो वह करवा चौथ व्रत जैसा ही होगा। राजनीति में ईमानदारी से प्रेरित करती है उसके लिए शुक्रगुजार भी हूं।

पत्नी के लिए पति क्यों नहीं कर सकता व्रत

हर काम में पतियों को भी अपनी पतियों का साथ देना चाहिए। करवा चौथ व्रत यह पतियों का ही त्योहार नहीं है पतियों का भी त्योहार है। अगर करवा चौथ व्रत पत्नी अपने पति के लिए करती है तो क्या पति करवा चौथ व्रत अपनी पत्नी के लिए नहीं कर सकता है।

जरूर कर सकते हैं अगर पति घर पर है और पत्नी घर के काम कर रही है तो पतियों का भी फर्ज बनता उसमें अपना भागीदारी दे। यह जल्दी नहीं है कि सारी परीक्षा पतियों को ही देनी पड़े, पतियों को भी कुछ परीक्षाएँ देनी चाहिए। कोई काम छोटा या बड़ा नहीं होता यह जल्दी नहीं है हर काम पत्नी ही करेगी परन्तु भी कर सकता है। अगर उसमें आप को उसमें ढालना भी चाहिए। मैं अपनी बात बताता हूं मैं घर के हर काम में अपनी पत्नी के साथ पूरी ईमानदारी से रहता हूं और उसके भले कल्याण और स्वास्थ्य के लिए भगवान से मांगता हूं।

...काश पत्नी की सलायती के लिए भी कोई व्रत होता

पतियां पुत्र, पुत्री पति सहित पूरे परिवार के लिए व्रत रखती हैं। पति के दीघार्यु होने के लिए निर्जला व्रत करवा चौथ व्रत महत्वपूर्ण और प्रसिद्ध है। पति यदि पति के लिए इतना करती है तो पति को भी कुछ करना चाहिए। पति कितना करते हैं यह तो उनकी आत्मा ही बेहतर जानती है। मेरे दिल में तो अक्सर यह बात आती है कि

पत्नी की सलामती के लिए कोई व्रत होता चाहिए। व्रत तो नहीं है पृ॒ मैं हमेशा अपनी मैडम की सलामती के लिए एप्स पिता परमेश्वर से अपेक्षा करता हूं। करने की बात करने तो मैडम की बात काढ़ूँ इन्हीं हिम्मत मुझमें वैसे हैं नहीं। उनके ब्रतोंके दिन मैं सरकार से अवकाश लेकर घर पर ही रहता हूं और गृहस्थी के उनके साथ खड़ा होना चाहिए और अपने आप को उसमें ढालना भी चाहिए। मैं अपनी बात बताता हूं मैं घर के हर काम में अपनी पत्नी के साथ पूरी ईमानदारी से रहता हूं कि पत्नी स्वस्थ और प्रसन्न रहे। और हर जन्म में मुझे पत्नी के तौर पर मिले।

**करे पति कितना भी पर पत्नी
का कर चुकाना वश का नहीं**

पति की दीघार्यु हेतु महिलाओं का अति पावन व्रत करवा चौथ करती हैं। पुत्रों के लिए भी व्रत का विधान है। पति कुछ भी कर ले पत्नी का कर उतार पाना उनके वश का नहीं है।

ऐसा नहीं है कि पति करते नहीं हैं पर पतियों का किया हमेशा बीस गिरता है। उनका संपूर्ण जीवन परिवारिक प्रेम, सौहार्द, एकजुटता हेतु त्याग का होता है। अटूट बंधन का प्रेम। ऐसा निश्चल प्रेम और त्याग देख कर तो लगता है काश! पतियों के लिए भी पतियों के प्रति ऐसा

उन्हें देनी चाहिए।

व्रत नहीं पर धर्मपत्नी की बहतरी मेरे जीवन का मूल उद्देश्य

पति को दीघार्यु रखने हेतु महिलाएं तो अति पावन व्रत करवा चौथ रखती हैं पर पुरुषों के लिए ऐसी व्रत का विधान नहीं है। सुहागिनें प्रतिवर्ष इस निर्जला व्रत को करती हैं। धन्य है यह देश और इसकी संस्कृति व

परंपराएं।

ऐसा नहीं है कि पति करते नहीं हैं पर पतियों का किया हमेशा बीस गिरता है। उनका संपूर्ण जीवन परिवारिक

प्रेम, सौहार्द, एकजुटता हेतु त्याग का होता है। अटूट

बंधन का प्रेम। ऐसा निश्चल प्रेम और त्याग देख कर तो

पतियों के प्रति ऐसा व्रत बना होता है। मैं तो व्रत मिलते ही यथा

संभव पत्नी के कार्य में हाथ बटाता रहता हूं। जैसे व्रत के

समय खाना पकाना, बर्तन धोना, कपड़े धोना वैगैरह-वैगैरह। उन्हें मनोवाञ्छित उपहार देना। उनकी

सुविधाओं का ख्याल रखना आदि।

पत्नी की गहता को जान उत्सकी कद करना ही है पति का व्रत

पति की दीघार्यु हेतु महिलाओं का अति पावन व्रत करवा चौथ करती हैं। पुत्रों के लिए भी व्रत का विधान है। पति कुछ भी कर ले पत्नी का कर उतार पाना उनके वश का नहीं है।

ऐसा निश्चल प्रेम और त्याग देख कर तो लगता है काश! पतियों

के लिए भी पतियों के प्रति ऐसा व्रत बना होता है। बात मैं अपनी

करती हूं तो मैं तन से नहीं पर मन से हमेशा पत्नी के

परंपराएं हैं। व्रत मिलते ही यथा संभव पत्नी के कार्य में हाथ

बटाता रहता हूं। जैसे व्रत के समय खाना पकाना, बर्तन धोना, कपड़े

धोना वैगैरह-वैगैरह। उन्हें मनोवाञ्छित उपहार देना। उनकी

सुविधाओं का ख्याल रखना आदि।

मैं धन्य हूं जो ईश्वर ने मुझे ऐसी सुंदर व सुशील पत्नी दी है जो हमेशा ही मेरा ख्याल रखती है।



देवनारायण सिंह पूना प्रमुख प्रतिनिधि दुबहड़ बलिया

पत्नी का सांगी कार्य निर्जला व्रत हूं करवा चौथ व्रत का तोहफा

पत्नी पति के बहुत कार्य और व्रत करती हैं। यह विशुद्ध रूप से बड़ा कार्य है। पतियों को भी चाहिए कि वह पत्नी के लिए ईमानदारी से कार्य करे। पति भक्त होना जैसे पतियों का सम्मान है वैसे पत्नी भक्ती भी सम्मान से होनी चाहिए।

मैं अपनी बात करने तो मैं पूरी तरह पत्नी भक्त हूं। मेरी पत्नी ब्लॉक प्रमुख हैं। मैं उनका प्रतिनिधि बन क्षेत्र में उनके सभी

कार्य निष्पादित करता हूं। ईमानदारी से पत्नी सेवा कर मैं उनके करवा चौथ व्रत के बदले को उत्तराने का प्रयास कर रहा हूं। फिर भी पत्नी की कर्मठता की बराबरी मुश्किल है।



सुशील सिंह, तहसील अध्यक्ष ग्रामीण
पत्रकार एसोसिएशन बलिया

पति को दीघार्यु रखने हेतु महिलाएं तो अति पावन व्रत करवा चौथ रखती हैं पर पुरुष के लिए ऐसे किसी व्रत का विधान नहीं है सुहागिनें प्रतिवर्ष इस निर्जला व्रत को करती हैं। धन्य है यह देश और इसकी संस्कृति व परंपराएं।

ऐसा निश्चल प्रेम और त्याग देख कर तो लगता है काश! पतियों के लिए भी पतियों के प्रति ऐसा व्रत बना होता। बात मैं अपनी करने तो मैं तन से नहीं पर मन से हमेशा पत्नी के लिए व्रत रहता हूं। जैसे व्रत के समय खाना पकाना, बर्तन धोना, कपड़े धोना वैगैरह-वैगैरह। उन्हें मनोवाञ्छित उपहार देना। उनकी सुविधाओं का ख्याल रखना आदि। मैं धन्य हूं जो ईश्वर ने मुझे ऐसी सुंदर व सुशील पत्नी दी है जो हमेशा ही मेरा ख्याल रखती है।

पत्नी का गान्धिक कष नहीं देना ही पति का असली रखवा चौथ व्रत

हर काम में पतियों को भी अपनी पतियों का साथ देना चाहिए। करवा चौथ व्रत यह पतियों का ही त्योहार नहीं है पतियों का भी त्योहार है। अगर करवा चौथ व्रत पर्न अपने पति के लिए नहीं कर सकता है। पत्नी को मानसिक कष नहीं देना ही पतियों का करवा चौथ व्रत है।

पति कितना करते हैं यह तो यह तो उनकी आत्मा ही बेहतर जानती है। मेरे दिल में तो अक्सर यह बात आती है कि विनय कुमार, अध्यापक, चंद्रशेखर विश्वविद्यालय बलिया

पत्नी की सलामती के लिए कोई व्रत होना चाहिए। व्रत तो नहीं है पृ॒ मैं हमेशा अपनी मैडम की सलामती के लिए परम पिता परमेश्वर से अपेक्षा करता हूं। करने की बात करने तो मैडम की बात काढ़ूँ इन्हीं हिम्मत मुझमें वैसे हैं नहीं। उनके ब्रतोंके दिन मैं सरकार से अवकाश लेकर घर पर ही रहता हूं और गृहस्थ के उनके कार्यक्रम के लिए कोई कुशलता से करता हूं। उनकी सुविधाओं का ख्याल रखता हूं। सब मिलाकर मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि पत्नी स्वस्थ और प्रसन्न रहे। और हर जन्म में मुझे पत्नी के तौर पर मिले।

पतियां पुत्र, पुत्री पति सहित पूरे परिवार के लिए व्रत रखती हैं। पति के दीघार्यु होने के लिए निर्जला व्रत करवा चौथ व्रत भवुत म

